RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 15 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 5 जुलाई, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-45, अंक : 15, 2-5 जुलाई 2020 तदनुसार 22 आषाढ़, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

संसार की अनित्यता

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता।
गोभाजऽइत्किलासथ यत्सनवथ पुरुषम्।।

-यजु:० ३५।४

शब्दार्थ-अश्वत्थे= अश्वत्थ पर **व:**= तुम्हारा **निषदनम्**= बैठना है **पर्णे**= पत्र पर **व:**= तुम्हारा **वसति:**= वास **कृता**= बना हुआ है। **यत्**= यदि **पुरुषम्**= पुरुष को **सनवथ**= पूजो तो **किल**= अवश्यमेव, **गोभाज:**= गोभागी **असथ**= हो जाओ।

व्याख्या-मनुष्य संसार में आकर समझता है कि मुझे सदा यहीं रहना है। युधिष्ठिर से यक्ष ने पूछा था-इस संसार में आश्चर्य क्या है? युधिष्ठिर जी ने जो उत्तर दिया, वह उस समय भी सत्य था और इस समय भी सत्य है-

'अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्। शेषा: स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत: परम्।।'

प्रतिदिन सहस्रों प्राणी मौत के घाट उतर रहे हैं, किन्तु शेष स्थायी रहना चाहते हैं, इससे अधिक आश्चर्य क्या है? अपने हाथों लोग अपने बन्धु-बान्धवों को जला आते हैं, किन्तु उन्हें यह कभी विचार नहीं आता कि हमारा भी निस्तारा कभी ऐसा ही होगा।

संसार के किसी पदार्थ में स्थिरता है ही नहीं। फिर यहाँ स्थिरता की कामना कैसी? तुम्हें ज्ञात है, तुम्हारी बैठक कहाँ है? **'अश्वत्थे वो निषदनम्'** = अश्वत्थ पर तुम्हारी बैठक है। 'अश्वत्थ' का अर्थ है- **य: श्वो न स्थास्यति स:** = जो कल न ठहरेगा। तुम सोच रहे हो, अमुक कार्य हम कल करेंगे, किन्तु तुम कल देख पाओगे, कल तक रह भी पाओगे, इसका क्या प्रमाण? तुम्हारा निषदन तो अश्वत्थ पर है। अश्वत्थ का एक अर्थ पीपल वृक्ष है। पीपल को लौकिक संस्कृत में चलदल भी कहते हैं। चलदल का अर्थ है चञ्चल पत्तों वाला। पीपल के पत्ते प्राय: हिलते रहते हैं, मानो वे अस्थिरता की घोषणा कर रहे हैं। तुम्हारा वास स्थान? **'पर्णे वो वसतिष्कृता'** = पत्ते पर तुम्हारा वास है। पत्ते का जीवन स्वयं अल्प होता है। जाने कब वायु का झोंका आये और पत्ता नीचे गिर जाए! जाने कब कोई पत्ता सूख जाए! जो स्वयं क्षणभङ्गुर है, उस पर आश्रय करने का क्या लाभ? कितने सरल किन्तु मार्मिक शब्दों में संसार की असारता, जीवन की क्षणभंगुरता का बोध कराया गया है!

इस संसार की असारता का ज्ञान कब होता है? **'गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्'**-जब पुरुष= पूर्णपुरुष भगवान् की पूजा करोगे तो निश्चय ही गोभागी=किरण-भागी= प्रकाशाधिकारी हो जाओगे। भगवान् प्रकाशकों के प्रकाशक हैं। प्रकाश की कामना है= जिससे सदसद्विवेक हो, खरे-खोटे का भान हो सके-तो भगवान् को भजो।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।।

-पू० १.२.१०.१

भावार्थ-जिस परमेश्वर के ये नाम हैं-सोम, राजा, वरुण, अग्नि, आदित्य, विष्णु, सूर्य ब्रह्मा और बृहस्पति ऐसे अनन्त नामों वाले परमात्मा को हम सदा स्मरण करते हैं। क्योंकि वह जगत्पति, परमेश्वर ही इस लोक और परलोक में हमें सुखी करने वाला है।

राय: समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वत:।
आपवस्व सहस्त्रिण:।।

-उ० २.२.१४

भावार्थ-हे परमात्मन्! हीरे, मोती, मणि आदि से पूर्ण जो चार दिशाओं में स्थित समुद्र हैं, हम उपासकों के लिए वह प्राप्त कराइये। किसी वस्तु की अप्राप्ति से हम कभी दु:खी न हों। आपकी कृपा से प्राप्त धन को, वेदविद्या की वृद्धि और आपकी भक्ति और धर्म प्रचार के लिए ही लगावें।

यो अग्नि देव वीतये हविष्माँ आविवासति।
तस्मै पावक मृडय।।

-उ० २.२.५

भावार्थ-हे पावक! पवित्र स्वरूप, पवित्र करने वाले परमेश्वर! जो उपासक पुरुष सत्कर्मों को करता हुआ आपका प्रेमपूर्वक उपासनारूप पूजन करता है ऐसे अपने प्यारे उपासक को आप, दिव्यगति मुक्ति देकर सदा आनन्द दीजिए।

त्वमित्सप्रथो अस्यग्ने त्रार्ऋत: कवि:।
त्वां विप्रास: समिधानं दीदिव आविवासन्ति वेधस:।।

-पू० १.१.४.८

भावार्थ-हे परम प्यारे परमात्मन्! आप सबके रक्षक, तेजोमय, सत्य, सर्वव्यापक और ज्ञानी हैं। आपको ही ज्ञानी महात्मा लोग, भजन करते हुए अपने जन्म को सफल करके, अपने सत्संगी पुरुषों को भी आपकी भक्ति और ज्ञान का उपदेश करते हुए उनका भी कल्याण करते हैं।

सत्यार्थप्रकाश में वर्णित आदर्श जीवन शैली

ले.-डॉ. निर्मल कौशिक 163, आदर्श नगर, फरीदकोट

वेदाभ्यास परायणो मुनिवरो वैदिकैः मार्गे रतः।।

नाम्ना यस्य दया विभाति निखिला तत्रैव यो मोदते।।

दयानन्द चित्रावली

वेद हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। सभी विद्याओं के अक्षुण्ण भण्डार है। अध्यात्म ज्ञान के ज्योति पुञ्ज हैं। तमसो मा ज्योतिर्गमय के सूत्रधार हैं। समय के चक्र ने हमें इस अमूल्य निधि से वंचित कर दिया था। समय ने करवट ली और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अवतरण से वेदों की पुनस्थापना से वेदों के अध्ययन अध्यापन का कार्य आरम्भ हुआ। उनके प्रचार प्रसार से भारतीय संस्कृति के प्रति, आदर्श जीवन मूल्यों के प्रति जनसमुदाय की जिज्ञासा बढ़ी। वेदों में निहित अमूल्य ज्ञान और ईश्वरीय सत्ता के स्वरूप को जानने का एक मार्ग प्रशस्त हुआ। समाज में फैली कुप्रथाओं, कुरीतियों, दुराचारों और अनाचारों को दूर करने हेतु वेद विद्या अध्ययन, वैदिक सन्ध्या, यज्ञ परम्परा, संस्कारों को अपनाने पर बल दिया गया। आर्य समाज की स्थापना से शुद्धाचरण पर बल दिया गया। श्रेष्ठ आचरण वाले मनुष्य को 'आर्य' की संज्ञा प्रदान की गई। धीरे-धीरे यह श्रेष्ठ जन समुदाय 'आर्य समुदाय' के रूप में 'आर्य समाज' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

यजुर्वेद में शुद्ध आचरण के विषय में वर्णित है।

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः।।

हे ईश्वर! (सविता देव) आप हमें

अपना यथार्थ ज्ञान प्राप्त करें तथा शुद्धाचरण वाला बनाकर

ऐश्वर्य भी प्रदान करें।।

यजु. 19.43

वेदों में आदर्श जीवनशैली अपनाकर जीवन को सुन्दर, सुखद और समाजोपयोगी बनाने के लिए मानव को सद्गुणों और सत्कर्मों द्वारा अवगुणों और दुष्कर्मों से दूर रहने की शिक्षा दी गई है। जब हम वेदों से ज्ञान प्राप्त करते हैं तो हमें अपनी परम्परा, संस्कृति, संसार और जीवनशैली का ज्ञान स्वतः ही हो जाता है। आधुनिक युग के युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने केवल वेदों का अध्ययन ही नहीं किया। उनमें वर्णित जीवनशैली को अपनाकर समाज को भी इसे अपनाने पर बल दिया। उन्होंने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखा है कि ''सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।'' स्वामी जी ने अपने स्वयं के अनुभवजन्य विचारों को ही इस अमूल्य ग्रन्थ में उद्घाटित किया है। उन्होंने तत्कालीन कुरीतियों, अनाचारों व दोषयुक्त परम्पराओं का खण्डन करके सभ्य समाज के अनुकूल परिष्कृत व सुसंस्कृत विचारों को ही पोषित किया। उन्होंने बताया कि ''जितना ज्ञान आवश्यक है वह वेदादि सच्छास्त्रों में उपलब्ध है। उनके ग्रहण में सब सत्य का ग्रहण हो जाता है। वेदों द्वारा स्थापित जिन आदर्शों का प्रभाव विलुप्त हो चुका था। स्वामी जी ने उन्हें पुनः स्थापित कर मृतप्रायः समाज को संजीवनी प्रदान की। उनके द्वारा आर्य समाज की स्थापना एक ऐतिहासिक सुखद घटना से कम नहीं है। आर्य समाज के दस नियम दसों दिशाओं में आर्य समाज की पताका फहराने में पूर्णतः सक्षम है। विश्वानि देव सवितुर दुरितानि परासुव यद् भद्रं तन्नासुव'' जैसे वेदवाक्य हमारे कुविचारों को दूर कर सविचारों को प्रदान करने हेतु ईशवन्दना है। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने इन्हीं भावनाओं को समाजोत्थान हेतु अत्यन्त सरल और सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया।

यजुर्वेद में ही ईश्वर से प्रार्थना की गई है। ३०/३

ओं विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्नासुव।

अर्थात् हे सविता स्वरूप विश्व के उत्पत्तिकर्त्ता समग्र ऐश्वर्ययुक्त शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता आप कृपा करके हमारे सारे दुर्गुणों को दूर करके कल्याणकारक गुण कर्म और स्वभाव को प्रदान कीजिए। वेद मानव जीवन के लिए इसीलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि वेद सभी धर्मों का मूल है 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' (मनुस्मृति)। मानव का प्रथम धर्म है उसका शुद्धाचरण इससे मानव का जीवन और उसका लक्ष्य निर्धारित होता है। आचरण वाणी से भी प्रकट होता है। शुद्ध वचन शान्ति प्रदत्त होते हैं। इन्हें सत्यवचन कहा जाता है। असत्य और अशुद्ध वचन कष्टदायक व पीड़ादायक होते हैं। ऋग्वेद में ऐसे वचन बोलने को निषेध कहा गया है। 'अधूर्षत स्वमेते वचोभिः

ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः।

12/5 ऋग्वेद।।

अर्थात् हम सरल (शुद्ध) आचरण करते हैं फिर भी जो हमसे दुष्टवचन बोलता है वे ही अपने वचनों द्वारा स्वयं नष्ट हो जाएँ।

सामाजिक और धार्मिक विषम और विकट परिस्थितियों में आबद्ध भारतीयजनों के उद्धार व निराकरण हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों के अध्ययन व उसकी जीवन में उपयोगिता के महत्त्व को प्रकट किया। वे अपने अध्ययन और अनुभव से वेदों के ज्ञान और सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने में आजीवन प्रयासरत रहे। ईश्वरीय स्वरूप से लेकर सामाजिक निरूपण तक के अनुभवों को उन्होंने अपने ग्रन्थों द्वारा समाजोद्धार हेतु प्रकाशित किया 'सत्यार्थ प्रकाश' तो उनका ''आत्म स्वरूप'' ही है। इसी से उनके 'सत्य' और 'ज्ञान' का यथार्थ ज्ञान मिलता है। मानव के आचरण द्वारा ही उसके सत्य और ज्ञान का प्राक्टय होता है। अतः 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी जी ने आचार (व्यवहार) और अनाचार को अत्यन्त सरल शब्दों में वर्णित किया है।

संसार के लगभग सभी भाषाओं के समग्र सद्साहित्य में मानव को सत्यनिष्ठ, सभ्य और सच्चरित्र बनने के लिए प्रेरणा दी गई है। इसके लिए अनेक प्रकार की नैतिक, मान्यताओं व नैतिक मूल्यों की स्थापना भी की गई। सदाचार व सत्यभाषण मानव समाज को सभ्य, सुसंस्कृत व सम्मान का अधिकारी बनाता है। सदाचार मानव जीवन को अलंकृत करता है और समाज में प्रतिष्ठा प्रदान करता है। ऐसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित व्यक्ति सदा ही समाज को सन्मार्ग प्रदान करते हैं। ऐसे लोगों का आचरण ही समाज के लिए अनुकरणीय और अनुसरणीय होता है। श्रीमद्भगवद्-गीता में भगवान श्री कृष्ण कहते है।

यच्छदाचरति श्रेष्ठस्तत्त्त देवेतरो जनः।।

सः यत्प्रमाणं कुरुते लोकात-दनुवर्तते।। 3/21

अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जैसा व्यवहार करता है। अन्य पुरुष उसके अनुसार ही अनुसरण करते हैं। वह जो प्रमाणित कर देता है। लोग वैसा ही उनका अनुकरण करते हैं। हमारे गुरुकुलों में प्रथम पाठ सत्यवद धर्म चर मातृदेवो भव पितृ देवो भव आचार्य देवोभव स्वाध्यायात् मा प्रमदः पढ़ाया जाता था। जिससे सदाचार की नींव सुदृढ़ होती थी।

सदाचार भारतीय जीवन पद्धति का मूलाधार है। भारतीय समाज का गौरव है। (सत्+आचार) सदाचार (सत्य) के मार्ग को अपना कर ही मनुष्य भावी पीढ़ी को सत्य पर चलने की प्रेरणा और सही दिशा प्रदान कर सकता है। सत्य ही व्यवहार (आचार) की आधारशिला है। सत्य ही नैतिकता का मार्ग प्रशस्त करता है। इसीलिए हमारे वेदों और धर्मग्रन्थों में सदाचार को मानव जीवन में अपनाने पर बल दिया गया है। सत्य ही सदाचार का संवाहक है।

'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी जी ने भूमिका में स्पष्ट लिखा है ''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।'' स्वामी जी

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

माता–पिता बच्चों के निर्माण पर विशेष ध्यान दें

वर्तमान में कोरोना नामक महामारी के फैलने से पूरे देश में स्कूल और कॉलेज बन्द हैं। इस महामारी के कारण पिछले 3–4 महीनों से बच्चे अपने घरों पर ही हैं। सामाजिक वातावरण से दूर सभी अपने–अपने घरों में कैद हैं। कुछ स्कूलों द्वारा बच्चों को ऑनलाईन पढ़ाई करवाई जा रही है। परन्तु फिर भी अधिकतर समय बच्चों का घर में ही माता–पिता के साथ बीत रहा है। इसलिए माता–पिता के लिए अपनी सन्तान का निर्माण करने के लिए स्वर्णिम अवसर है। कुछ माता–पिता तो इन छुट्टियों से तंग आ चुके हैं और बड़ी बेसब्री से स्कूलों के खुलने का इन्तजार कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि कब स्कूल खुलें और कब बच्चे स्कूल जाएं जिससे वे उनकी शरारतों से छुटकारा पा सकें। परन्तु अगर माता–पिता सकारात्मक विचारों के साथ इस समय का सदुपयोग करें और यह सोचें कि परमात्मा ने हमें यह सुअवसर प्रदान किया है तो वे इस समय को व्यर्थ नहीं गवां सकते हैं। अगर वे इस अवसर को पहचान लें तो बच्चों के अन्दर अनेक अच्छाईयां उत्पन्न कर सकते हैं जिससे वे सभ्य नागरिक बन कर राष्ट्र की उन्नति में अपना योगदान दे सके।

संसार में दो प्रकार के माता–पिता होते हैं। एक वह जो अपने हाथों से सन्तान को अमृत पिलाते हैं और दूसरे वह जो अपने हाथों से सन्तान को विष पिलाते हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि अमृत पिलाने वाले माता–पिता कौन से हैं? जो बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार देना प्रारम्भ कर देते हैं। यदि बच्चा कोई कुचेष्टा करता है, या अनावश्यक जिद्द करता है तो वह बालक को दण्ड़ देने में जरा भी संकोच नहीं करते, जो अपने बच्चों की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखते हैं, उसके द्वारा किए कार्य की समीक्षा करते हैं, ऐसे माता पिता अपनी संतानों को अमृत पिलाते हैं। उनकी संतानें फिर कुमार्ग पर नहीं जाती और सदा सुमार्ग पर चलने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं। प्राय: देखा जाता है कि वह अधिकतर परिश्रमी और पुरूषार्थी होते है और शिक्षाकाल में सबसे आगे रहते हैं। ऐसी संतानें न केवल माता पिता का नाम रोशन करती हैं बल्कि देश के लिए भी उनका जीवन प्रशंसनीय होता है और वे देश के अच्छे नागरिक बनकर देश की उन्नति और तरक्की में अपना योगदान देते हैं। धन्य हैं ऐसे माता–पिता जो बच्चों के निर्माण करने में अपनी सब सुख सुविधाओं को त्याग कर अपना जीवन साधनामय बनाते हैं। ऐसे माता–पिता अपनी दिनचर्या ऐसे बनाते हैं जो संतान के लिए प्रेरणादायक बन जाती है। संतान व्यवहार की सभी बातें जैसे समय पर सोना जागना, समय पर अपने सभी कार्य सम्पन्न करना, खान–पान पर ध्यान देना आदि सभी बातें संतान पर प्रभाव ड़ालती हैं।

जिस माता–पिता का जीवन और उनकी दिनचर्या नियमित नहीं होती, जो भोग विलास में पड़कर अपना जीवन बिताते हैं। ऐसे माता–पिता की संतान कभी संस्कारी नहीं बन सकती। ऐसे माता–पिता बाद में पछताते हैं जब उनकी संतान उनके कहने से बाहर हो जाती है। मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरूषो वेद अर्थात् जब उत्तम शिक्षक अर्थात् पहले माता, दूसरे पिता और तीसरे आचार्य मिल जाए तभी बच्चा जीवन के हर क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। वे कुल धन्य हैं जिनके माता पिता धार्मिक और विद्वान् हैं। जितना माता से संतानों को लाभ पहुंचता है उतना और किसी से नहीं क्योंकि बच्चों का जीवन प्रभात माता की गोद में गुजरता है। वास्तव में बच्चे की शिक्षा तो गर्भाधान से ही आरम्भ हो जाती है। माता को अति उचित है कि गर्भाधान काल में अपनी दिनचर्या, अपना खान–पान ऐसा बनाएं जिससे गर्भ के अन्दर बच्चे के ऊपर अच्छे संस्कार पड़े। संतान जो कुछ भी है, वह अपने माता पिता के आचार, विचार, आहार, व्यवहार और संस्कार का प्रतिबिम्ब है। माता–पिता के आचार विचार का प्रभाव संतान पर अवश्य पड़ता है। माता चाहे तो बालक को शूरवीर, धीर, गम्भीर, धर्मात्मा, विचारशील, विद्वान्, बना सकती है और अगर माता चाहे तो उसको कायर, मूर्ख और अज्ञानी बना सकती है। दूसरे शब्दों में कहें तो बालक की प्रवृत्ति माता ही बनाती है। यदि माता अपने उत्तरदायित्व को समझ जाए तो संसार के सभी संकट दूर हो सकते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के संस्कारविधि में बताए हुए निर्देशों का पालन करें तो ऐसी ही गुणवान् और श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त संतान पैदा हो सकती है। सुख देने वाली संतान के विषय में यजुर्वेद में एक मन्त्र आया है कि जो माता–पिता अपने पुत्रों और कन्याओं को ब्रह्मचर्य उपदेश के साथ वेद विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त करते हैं, वे उनके शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाने वाले होते है और संतानों के लिए अत्यन्त हितकारी होते हैं। ऐसे माता–पिता की संतानें अपने माता–पिता को सुखयुक्त करती हैं।

नीतिकार ने बहुत ही सुन्दर कहा है कि वह माता बच्चे की शत्रु है और पिता वैरी है जो अपनी संतानों को अच्छी शिक्षा नहीं देते हैं, अच्छे गुणों से युक्त नहीं करते हैं। ऐसी संतान विद्वानों के बीच में ऐसे ही शोभा नहीं पाती है जैसे हंसों के बीच में बगुला शोभा नहीं पाता है। इसलिए माता–पिता का दायित्व है कि वे अपनी संतानों को उत्तम संस्कार देकर उन्हें सुयोग्य और विद्वान् बनाएं। ऐसे–ऐसे सुन्दर उपदेश माता और पिता को बच्चों को देने चाहिए ताकि सन्तान सदा आज्ञाकारी रहे। माता–पिता को बच्चे के प्रत्येक कार्य पर नजर रखनी चाहिए, उसकी अच्छी और बुरी आदतों का पता करना चाहिए और उसका सुधार करने के लिए सकारात्मक कदम उठाने चाहिए। बच्चों की किसी भी गलती को अनदेखा नहीं करना चाहिए। जो माता–पिता अपने बच्चों की छोटी–छोटी गलतियों से किनारा कर लेते हैं वे बाद में पछताते हैं। बच्चों और विद्यार्थियों का जीवन बड़ा पुरूषार्थ और निरालस्य होना चाहिए। कष्टों के पहाड़ उपर गिरने पर भी सहनशीलता को प्राथमिकता देनी चाहिए। संघर्ष का दूसरा नाम ही विद्यार्थी जीवन है। जो माता–पिता विद्यार्थी काल से अपने बच्चों का जीवन संघर्षमय बनाते हैं, उन्हें मेहनत का जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं वही बच्चे आगे चलकर महान् बनते हैं और अपने लक्ष्य की ऊँचाईयों को प्राप्त करते हैं। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं उन्होंने अपने जीवन में संघर्ष किया है, कठिन पुरूषार्थ किया है तभी इतने वर्षों के बाद भी हम उनके जीवन से प्रेरणा लिया करते हैं। ऐसे महापुरूषों का जीवन हमारे लिए प्रकाश स्तम्भ बन जाता है। जो माता पिता बच्चों का जीवन सुखमय बना देते हैं, उनमें परिश्रम करने की आदत नहीं डालते वही बच्चे आलसी होते हैं और किसी भी कार्य को करने से घबराते हैं, उनके अन्दर आत्मविश्वास की कमी होती है। ऐसे बच्चे अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते।

इस समय बच्चे अपना अधिकतर समय अपने माता–पिता एवं परिवार के साथ बिता रहे हैं। इसलिए माता–पिता का कर्त्तव्य है कि वे अपनी सन्तानों को आत्मविश्वासी बनाएं। उनके अन्दर मेहनत करने की, पुरूषार्थ करने की भावना कूट–कूट कर भरें ताकि वे विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य को बनाएं रखे। यह माता पिता का परम कर्त्तव्य है कि वह अपनी संतानों को कैसा बनाना चाहते है? माता–पिता जिस प्रकार का अपने बच्चों को बनाना चाहते हैं वैसे ही उन्हें स्वयं भी बनना होगा। माता–पिता का जीवन बच्चों के लिए प्रेरणा व आदर्श बन जाए, ऐसा उन्हें प्रयत्न करना चाहिए। जो माता पिता संतान का निर्माण करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं वही सन्तान आज्ञाकारी, गुणवान, और धार्मिक बनती है और जो अपने इस कर्त्तव्य की अवहेलना करते हैं उन्हें बाद में पछताना पड़ता है। आज की इस परिस्थिति में सभी माता–पिता अपने–अपने कर्त्तव्य को समझे और अपनी सन्तानों को उत्तम, चरित्रवान, धार्मिक, गुणवान और आज्ञाकारी बनाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

अवध्य गाय का वध मत करो

ले.-रामफल सिंह आर्य तृतीय तल आनन्द बिहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली

हमारे इस लेख के शीर्षक को पढ़कर सभी के मन में यह विचार अवश्य ही उठ रहा होगा कि हम गौ-हत्या पर कुछ कहने लगे हैं। जी हां! बात कुछ-कुछ तो सत्य है परन्तु पूरी सत्य नहीं है क्योंकि 'गौ' शब्द संस्कृत भाषा में बड़े ही विशाल अर्थ वाला है। इसका अर्थ चार पैरों वाला पशु गाय तो है ही परन्तु इसके साथ-साथ यह अन्य भी कई महत्त्वपूर्ण अर्थों में भी प्रयुक्त होता है और वे अर्थ भी यही दिखलाते हैं कि इस गो का वध कदापि मत करना, यह पूर्ण रूप से अवध्य है। बहुत ही भोली है, जब तुम इसे मारोगे तो यह बड़ी ही सरलता से मर जायेगी लेकिन इसकी यह सरलता से होने वाली मृत्यु मारने वाले के लिये बहुत बड़ी विपत्तियों का भण्डार खोल देती है जिससे वह कभी सुख को प्राप्त नहीं कर पाता। अपितु यूं कहना चाहिये कि वह अपने लिये विनाश का द्वार खोल लेता है। अपने विषय में आगे बढ़ते हुए हम ऋग्वेद का सबसे बड़ा प्रसिद्ध मन्त्र उपस्थित कर रहे हैं:-

माता रूद्रानां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि:।

प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।

(ऋ. ८।१०१।१५)

इसका शब्दार्थ है -मैं (चिकितुषे जनाय) प्रत्येक चेतना वाले मनुष्य को (नु प्रवोचम्) कहे देता हूं कि (अनागाम्) निरपराध (अदितिम), अहन्तव्या (गाम्) गौ को (मा वधिष्ट) कभी मत मार, क्योंकि यह (रूद्रानां माता) रूद्रदेवों की माता है, (वसूनां दुहिता) वसु देवों की कन्या है और (आदित्यानां स्वसा) आदित्य देवों की बहन है तथा (अमृतस्य नाभि:) अमृतत्व का केन्द्र है।

इस शब्दार्थ को पढ़कर यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि यहां पर केवल गाय पशु से अभिप्राय नहीं है, यहां पर कुछ और ही लक्षित किया जा रहा है। वह कौन सी गाय है और इन देवताओं से अर्थात् रूद्र वसु और आदित्यों से यह सम्बन्ध कैसे है, इसी पर विचार करना है। जैसे कि हम ऊपर पढ़ चुके हैं कि गो शब्द के अनेक अर्थ यथा किरणें, वाणी, पृथ्वी आदि भी हैं अत: निश्चित रूप से यह सम्बन्ध कहीं न कहीं इनसे ही सिद्ध हो सकेगा। तो आईये चलते है वाणी की ओर। नि:सन्देह यहां पर वाणी की ओर ही संकेत है। यह वाणी ऐसी देवी है जिसका वध कदापि नहीं किया जाना चाहिये। मानव शरीर में जब देवताओं का प्रवेश हुआ तो सबसे पहले वाणी ही आकर इसमें विराजमान हुई, ''अग्निर्वाक् भूत्वा मुखं प्राविशत्'' (ऐतरेयोपनिषद) अर्थात् अग्नि ही वाणी बनकर मुख में आ बैठी। यह वाणी ही जीवन के सभी व्यवहारों को सिद्ध करवाने वाली है, यही सबको आगे लेकर चलती है। क्यों? क्योंकि इसका देवता ही अग्नि है अत: आगे लेकर तो यही जायेगी। अग्नि इसलिये अग्नि है कि वह अग्रणी-सबसे आगे रहता है। यहां तक कि संध्या के मन्त्रों में भी जब शरीर के अंगों का मार्जन करने के लिये बढ़ते है, तो सर्वप्रथम स्थान वाक् का ही आता है। यही क्रम हवन से पहले अंग स्पर्श में रखा गया है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि सब अंगों से वाणी की महत्ता सर्वप्रथम है।

उपरोक्त वेद मन्त्र में वाणी को आदित्य देवों की बहन कहा गया है। तैंतीस देवताओं की संख्या में आठ वसु, ग्यारह, रूद्र और बारह आदित्यों का वर्णन आता है। पृथिवी, द्यौ, अग्नि, वायु, अन्तरिक्ष, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र= आठ वसु, प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और जीवात्मा= ग्यारह रूद्र, संवत्सर के बारह महीने= बारह आदित्य, इन्द्र और प्रजापति ये कुल मिलाकर ३३ देव कहलाते हैं। वेद मन्त्र कह रहा है कि यह गो= वाणी रूद्रों की माता है। कैसे? क्योंकि यह प्राणों की और सब चेतनाओं की माता है। हमें जब भी किसी को प्रेरणा देनी होती है, आदेश देना होता है, उपदेश देना होता है, प्रार्थना करनी होती हैं, सांत्वना देनी होती है, हंसाना होता है तो वे सब व्यवहार वाणी से ही उत्पन्न होते हैं। यही कार्य तो रूद्रों के है। रूद्र किसे कहते हैं? रुलाने वाले को रूद्र कहते है। विचार कीजिये कि किसी अन्य व्यक्ति की कहीं हुई बात से हमारे अन्दर, हर्ष, शोक, क्रोध, भय आदि अब उत्पन्न होते हैं तो प्राणों की गति सामान्य नहीं रहती है, तीव्र हो जाती है। यहां तक कि ईश्वरोपासना में भी जब मन एकाग्र होकर प्रभु प्रेम में बंधा उसकी अनुभूति की एक ही झलक मात्र ही पाता है तो साँसों का प्रवाह भी तीव्र होने लगता है। गद्गद् कण्ठ से पुकारने पर भी श्वास तीव्र गति से चलते हैं। क्यों? क्योंकि वाणी अपने स्वरूप में स्थित होकर रूद्रों को प्रेरणा दे देती है। इसीलिये उसे रूद्रों की माता कहा गया है। अगला पद कह रहा है कि यह वसुओं की दुहिता पुत्री है। कैसे? यह आत्मा की वासक अग्नियों से प्रकट होती है। इसे भी समझने का प्रयास कीजिये।

अपनी पुस्तक वर्णोच्चारण शिक्षा में महर्षि दयानन्द जी ज्ञान सूत्र देते रहे हैं कि वर्णों का उच्चारण होता कैसे है? वे लिखते हैं:-

आत्मा बुद्धया समेत्यार्थान् मनो युंक्ते विवक्षया।

मनस्तु कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारूतम्।

मारूतस्तूरसि चरन् मन्द्र जायते स्वरम्।।

अर्थात् जब आत्मा किसी तत्व का निर्णय करके उसे प्रकट करने की इच्छा से मन को प्रेरणा देता है तो मन देह की अग्नि पर प्रभाव डालता है। अग्नि वायु को बाहर फैंकता है और वायु यथास्थान पहुंच कर वर्णोच्चारण कराता है। ये अग्नि और वायु क्या है? आठ वसुओं में से ही तो हैं। उन्हीं से यह वाणी प्रकट वा उत्पन्न की जा रही है अत: सिद्ध हुआ कि वसुओं की पुत्री है।

अब तृतीय पद पर आ जाईये, वह कह रहा है कि आदित्य की बहन है। इस पर विचार करते हैं। आदित्यों का क्या कार्य है? हमारे सब व्यवहारों को सिद्ध करती हुई हमें आगे लेकर चलती है। समान व्यवहार वाले होने से वाणी और आदित्य भाई बहन कहें गये हैं। आदित्य भले हमारी आयु को लेते जाते हैं परन्तु आगे लेकर जायेगे तभी तो आयु को लेगें। यदि वे आगे लेकर न जाये तो आयु का लेना भी संभव न हो सकेगा। यही दशा वाणी की भी है। तनिक विचार कीजिये कि यदि वाणी न हो तो संसार का सारा कार्य, सारा व्यवहार ही हार जाये अत: उसी की सहायता से हम आगे चलते हैं। मनुष्यों की तो बात ही क्या है पशु-पक्षियों में भी वाणी (यद्यपि उसे वाणी नहीं, स्वर कहना अधिक उचित है) के बदलने से वे एक दूसरे के व्यवहार को जान लेते हैं। भेड़ियों, बकरियों, कुत्तों, गायों, बगुलों, कौओं आदि में इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। शेर की दहाड़ के विभिन्न प्रकार के उतार चढ़ाव उसके व्यवहार को भली भांति दर्शा देते हैं।

अब चलिये इस वाणी रूपी गौ की हत्या कैसे होती हैं और उसके क्या-क्या भयानक दुष्परिणाम होते हैं, यह देख लेते हैं। सत्य में प्रतिष्ठित, संयम से शुद्ध की गई

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, दादाबाडी कोटा (राज.)

जब से मनुष्य ने होश संभाला तभी से उसके सामने यह प्रश्न उपस्थित होता रहा है कि यह सृष्टि क्या है? इसकी उत्पत्ति कब हुई है? सृष्टि की रचना कैसे है? क्या इसका कोई निर्माता है?

विश्व की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद में जिज्ञासु प्रश्न करता है- कि स्विद्वनंक क उ स वृक्ष आसयतो द्या पृथिवी निष्टातक्षु।

वह कौन सा वन है और कौन सा वह वृक्ष है जिससे द्युलोक, पृथ्वी लोक आदि की उत्पत्ति हुई है। फिर ऋग्वेद 1.164.34 में जिज्ञासु प्रश्न करता है-

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।

पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम।।

हे विद्वान्। आपसे पृथ्वी के अन्त के विषय में पूछता हूँ। जहां लोक समूह का बंधन है उसके विषय में पूछता हूँ। घोड़ों के समान वह वीर्यवान कौन है जिससे संसार का जन्म हुआ है? मैं आपसे इस फैले हुए आकाश के विषय में भी पूछना चाहता हूँ। अगली ऋचा में इन प्रश्नों के तर्क संगत उत्तर भी दिये गये हैं। परन्तु सृष्टि उत्पत्ति एवं संरचना के विषय में आज भी प्रश्न पूछना बन्द नहीं हो गया है। आज के लगभग 135 वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश लिखा तो उन्होंने भी आठवां समुल्लास इन्हीं प्रश्नों का उत्तर देने के लिए लिखा। उन्होंने सम्मुल्लास का शीर्षक ही 'अथ सृष्टयुत्पत्ति स्थिति प्रलय विषयान व्याख्यास्यामः' रखा तथा वेदानुकूल तर्क पूर्ण ढंग से विषय को रखने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने सर्व प्रथम जगत् की उत्पत्ति के तीन कारण बतलाये। निमित्त कारण, उपादान कारण तथा साधारण कारण। निमित्त कारण उसको कहते हैं कि जिस के बनाने से कुछ बने और न बनने से न बने, जैसे कुम्हार के बनाने से मिट्टी के विभिन्न पात्र बनते हैं और नहीं बनाने से नहीं बनते हैं। आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर से बना देवे।

दूसरा उपादान कारण जिसके अभाव में कुछ नहीं बन सके, वही अवस्थान्तर रूप होकर बने और बिगड़े भी जैसे मिट्टी के अभाव में मिट्टी के पात्र नहीं बने। बनने वाली वस्तु में उपादान कारण के गुण आ जाते हैं। तीसरा साधारण कारण उसको कहते हैं कि जो बनने में साधन और साधारण निमित्त हो। जैसे मिट्टी से पात्र बनाने में दण्ड, चक्र, पानी आदि सामान्य निमित्त होते हैं।

वेद के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति, में ब्रह्म निमित्त कारण, प्रकृति उपादान कारण तथा दिशा, काल, आकाश, प्रकाश, आंख, हाथ, ज्ञान क्रिया आदि निमित्त साधारण कारण हैं।

वैदिक सिद्धान्तानुसार ईश्वर, जीव एवं प्रकृति ये तीन अनादि पदार्थ हैं। इसके प्रमाण में स्वामी जी लिखते हैं-

द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाक शीति।।

ऋ. 1.164.20

विषय को बढ़ाते हुए फिर वे लिखते हैं-

शाश्वतीभ्यः समाभ्यः। यजु. 40.8 अर्थात् अनादि सनातन जीव रूप प्रजा के लिए वेद द्वारा परमात्मा ने सब विद्याओं का बोध किया है।

फिर अव्यक्त प्रकृति से व्यक्त सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम सांख्य दर्शन के आधार पर बताते हुए वे सांख्य कारिका उद्धृत करते हैं-

सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् महतोऽहङ्कारात् पञ्चतन्मात्राण्युभयमिन्द्रियं पञ्चतन्मात्रेभ्यः स्थूल भूतानि पुरूष इति पञ्चविंशतिर्गणः।

शुद्ध, मध्य, जड़ता तीन वस्तु मिलकर एक संघात है उसका नाम प्रकृति है। उससे महतत्व बुद्धि, उससे अहङ्कार, उससे पञ्चतन्मात्रा, सूक्ष्मभूत और दश इन्द्रियां तथा ग्यारहवां मन, पांच तन्मात्राओं से पृथिव्यादि पांच भूत ये चौबीस और पच्चीसवां पुरूष अर्थात् जीव एवं परमेश्वर है। इनमें से प्रकृति अविकारिणी और महतत्व, अहङ्कार तथा पांच सूक्ष्म भूत प्रकृति का कार्य और इन्द्रियां, मन तथा स्थूल भूतों का कारण है। और प्रकृति उपादान कारण और न किसी का कार्य है।

फिर तैत्तिरीय उपनिषद के आधार पर उत्पत्ति के क्रम को बताते हैं-

तस्माद्वा एतस्मादातमन आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषधयः। ओषधिभ्योऽन्नम्। अन्नाद्रेतः। रेतसः पुरूषः। स वा एष पुरूषोऽन्नरसमयः।

आगे कहते हैं कि कारण का कारण नहीं होता। असत् से सत् उत्पन्न नहीं होती तथा सत् कभी नष्ट नहीं होता। इस सम्पूर्ण विवरण में स्वामी जी ने अपनी ओर से कुछ नहीं लिखा है। उन्होंने वेद, उपनिषद् तथा सांख्य दर्शन के आधार पर ही इन्हीं के शब्दों में अपने विचार रखे हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व प्रलयावस्था भी नासदीय सूक्त के आधार पर ही बतलाई है-

तम आसीत् तमसा गुढमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।

तुच्छ येनाभ्वपिहितं सदासीत्तपसस्तन्महिना जायतैकम्।

यह सब जगत् सृष्टि से पहले अन्धकार से आवृत, रात्रि रूप में जानने के अयोग्य, आकाशरूप सब जगत् तथा तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सम्मुख एक देशी आच्छादित था। पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य से कारणरूप से कार्यरूप में कर दिया।

वेद के अनुसार सृष्टि प्रवाह से अनादि है। सृष्टि उत्पत्ति स्थिति एवं प्रलय का चक्र चलता रहता है। प्रश्न उठता है कि क्या प्रलय से पूर्व की सृष्टि भी वर्तमान सृष्टि के समान ही थी?

इसके उत्तर में स्वामी जी कहते हैं-सृष्टि जैसी अब है वैसी ही पहले थी और आगे भी होगी! प्रमाण में कहते हैं-

सूर्या चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।। ऋ. 10.190.3

परमेश्वर जैसे पूर्व कल्प में सूर्य, चन्द्र, विद्युत, पृथ्वी, अन्तरिक्ष आदि बनाता था, वैसे ही अब बनाये हैं और आगे भी वैसे ही बनावेगा।

प्रलय कैसे होता है इस विषय पर ऋग्वेद 10.27.13 कहता है-

पत्तो जगार प्रत्यञ्चमत्ति शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरथम आसीन् उर्ध्वामुपसि क्षिणातिन्यङ् डुत्तानामन्वेति भूमिम्।।

प्रलय काल में इन्द्र परमेश्वर जगत् को कार्य रूप से कारण रूप में बदलकर ग्रहण करता है। प्रकृति में शीर्ण परमाणु समूह को उत्तम भाग आकाश में धारण करता है। वह प्रलय करते समय ऊपर के लोकों में विद्यमान प्रकृति को समीप में स्थित हुआ क्षीण करता है और उत्तान भूमि को क्षय करता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के लेख के पक्ष में शास्त्रीय समर्थन की खोज करने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि उन्होंने वेद मंत्रों, दर्शन सूत्रों अथवा उपनिषद के श्लोकों को रखकर उनकी व्याख्या करते हुए ही अपने मन्तव्य की स्थापना की है, अतः हम अब विज्ञान के आधार पर इस मान्यता की स्थिति पर विचार कर रहे हैं। विज्ञान सृष्टि की उत्पत्ति हुई है इसे स्वीकार करता है तथा अपनी मान्यता के पक्ष में तर्क संगत विचार इस प्रकार रखता है-उष्मा गति का दूसरा नियम जिसे एन्ड्रोपी का नियम भी कहा जाता है सृष्टि के सदैव से रहने की बात को असत्य सिद्ध कर देता है। इस नियम के

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय

अनुसार ताप अपेक्षाकृत गरम पिण्डों से ठंडे पिण्डों की तरफ लगातार प्रवाहित होता रहता है तथा इस प्रवाह को उलट कर विरुद्ध दिशा में प्रवाहित नहीं किया जा सकता है। जब तापमान सर्वत्र तब भौतिक अथवा रासायनिक कोई भी क्रिया नहीं होवेगी एक सा हो जावेगा और कोई उपयोगी ऊर्जा शेष नहीं रहेगी किन्तु क्योंकि अभी भौतिक एवं रासायनिक क्रियाएं जारी हैं इसलिए जीवन का अस्तित्व चल रहा है। इससे यह स्पष्ट है कि यह सृष्टि सदैव से नहीं रही है अन्यथा इसमें उपयोगी ऊर्जा कभी की समाप्त हो गई होती। इस प्रकार सर्वथा अनचाहे विज्ञान यह सिद्ध करता है कि इस विश्व का प्रारम्भ है-और ऐसा करने में परमात्मा की सत्ता को भी सिद्ध करता है क्योंकि जिसका भी आदि है उसका कोई न कोई प्रारम्भ करने वाला भी है। स्टीफन डर्बल्यू हाकिङ्ग ने उसका समर्थन करते हुए कहा है कि यदि सृष्टि की उत्पत्ति हुई है और अब विज्ञान ने इसे सिद्ध भी कर दिया है तो इसका उत्पत्ति कर्ता ईश्वर ही है और वह निराकार तथा अत्यन्त बुद्धिमान है। Big Bang Theory सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम भी बताती है। Hubble's Law से तो सृष्टि की आयु को गणना भी कर ली गई है। सृष्टि उत्पत्ति से पूर्व की स्थिति पर विज्ञान अधिक प्रकाश नहीं डाल पा रहा है जब कि स्वामी जी ने नासदीय सूक्त के आधार पर उस अवस्था का भी वर्णन कर दिया है। सृष्टि का उपादान कारण भी विज्ञान ऊर्जा को स्वीकार कर रहा है जो प्रकृति का ही एक रूप है।

इस प्रकार संक्षेप में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सृष्टि उत्पत्ति स्थिति एवं प्रलय सम्बन्धी वैदिक मान्यता को शास्त्रों एवं विज्ञान का समर्थन दिला दिया है।

पृष्ठ 2 का शेष-सत्यार्थप्रकाश में वर्णित...

ने जिस सत्य का उल्लेख किया है वह मनुष्य के सत्व गुणों और सद्व्यवहार से उद्घाटित होता है। इस सत्व और सत्य का सम्बन्ध हमारी बुद्धि और चित्तन से सम्बन्धित है। जो हमारी दिनचर्या से परिलक्षित होता है। 'सत्यार्थ प्रकाश' के नवम समुल्लास में वे कहते हैं। ''जो वेदों का अभ्यास, धर्मानुष्ठान, ज्ञान की वृद्धि, पवित्रता की इच्छा, इन्द्रियों का निग्रह, धर्म क्रिया और आत्मा का चिन्तन होता है।

यही सत्त्वगुण का लक्षण है।'' जब यह सारे गुण मनुष्य के व्यवहार में दिखने लगते हैं तो मनुष्य का सदाचार स्वत: प्रकट होता है। अन्यथा इन गुणों से विहीन मानव अपने जीवन में पथभ्रष्ट और दुराचारी होकर जीता है। वेदों में मानवीय गुणों में सदाचार को लाने के लिए गुरुकुलों में वेद विद्या के द्वारा ही सत्यंवद, धर्मचर, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव और स्वाध्यायान् मा प्रमद: आदि की भावना से गुरु शिष्य को शिक्षा प्रदान करता था। सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में स्वामी जी कहते है। ''जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्याभाषणादि आचरण करना है। वह जहाँ कहीं करेगा आचार और धर्म भ्रष्ट कभी न होगा।'' अत: ''सत्यार्थ प्रकाश'' में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने कहा कि जीवन को वेदानुकूल बनाने व आदर्श जीवन शैली अपनाने हेतु सत्य व सदाचार के मार्ग पर चल कर जीवन को सफल व सार्थक बनाया जा सकता है।

पृष्ठ 2 का शेष-महात्मा चैतन्यमुनि जी का निधन...

जा सकता। महात्मा चैतन्यमुनि जी एक महान् आत्मा थे। समय-समय पर हम सबका मार्गदर्शन करते रहते थे। महात्मा चैतन्यमुनि जी हम सबके लिए पूजनीय थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनके निधन पर गहरा दुख व्यक्त करती है। हम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं पंजाब की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की तरफ से महात्मा चैतन्यमुनि जी को हार्दिक श्रद्धार्जलि अर्पित करते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे और अपने चरणों में स्थान दे। आर्य जगत् में उनके निधन से जो क्षति हुई है परमात्मा उसकी पूर्ति करे।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा के साप्ताहिक सत्संग एवं हवन यज्ञ में सर्वश्री रणजीत सोंधी, सुशील कोहली, बलराज खोसला, डा कैलाश नाथ भारद्वाज, सुशील वर्मा, डा. यश चोपड़ा, रमेश वर्मा, नीलम चोपड़ा एवं सरला चोपड़ा जी ने श्रद्धापूर्वक वेदमंत्रों का पाठ करते हुए शुद्ध घी तथा हवन सामग्री की आहुतियां दीं। सत्संग के दौरान परम श्रद्धेय स्वर्गीय महात्मा चैतन्य मुनि जी के प्रति श्रद्धासुमन व्यक्त करते हुए प्रधान डा कैलाश नाथ भारद्वाज जी ने कहा कि आर्य जगत उनके विचारों से खूब लाभान्वित हो रहा था। वह हिमाचल के सुन्दरनगर में योग आश्रम का संचालन करते थे। वैदिक साहित्य पर उनकी सैंकड़ों पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

बड़े शौक से सुन रहा था जमाना, तुम्हीं सो गए दास्तां कहते कहते।

आर्य माडल सी सै स्कूल फगवाड़ा के प्रबंधक सुरिन्द्र चोपड़ा, रमेश सचदेवा, आशु पुरी, रोहित प्रभाकर, धर्मवीर नारंग, डा योगेन्द्र पाल शर्मा, प्रोफैसर सरला भारद्वाज, मदन मोहन खट्टर तथा बलदेव शर्मा ने भी उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस मौके पर आर्य समाज के पूर्व उप प्रधान स्वर्गीय सत्य देव सरल के पुत्र व रिटायर्ड अध्यापक, मास्टर अनिल देव जी के एक दुर्घटना में हुए आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट करते हुए श्रद्धांजलि दी गई।

-डा. यश चोपड़ा महासचिव

महात्मा चैतन्यमुनि जी के दुखदायी देहावसान पर महर्षि दयानन्द मठ द्वारा श्रद्धांजलि एवं शोक प्रस्ताव

दिनांक 27.06.2020 दिन शनिवार को प्रधान श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल की अध्यक्षता में एक मीटिंग रखी गई, जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, सन्यासी, सुप्रसिद्ध लेखक कई आर्य संस्थानों के संचालक, मृदुभाषी एवं करूणा की मूर्ति श्रद्धेय महात्मा चैतन्य मुनि जी का शोक संतप्त देहावसान 26.06.2020 दिन शुक्रवार को सुन्दरनगर हिमाचल प्रदेश में हो गया है, इस शोकाकुल अवसर पर मठ का ट्रस्ट और प्रबन्धकर्तृ सभा का हर पदाधिकारी एवं सदस्य शोकाकुलि है और अपनी सम्वेदना श्रद्धेय माता सत्यप्रियायति जी के साथ प्रकट करता है और शोक की इस घड़ी में उनके साथ खड़ा है। श्रद्धेय महात्मा चैतन्यमुनि जी ने जीवनभर आर्य जगत को अपनी सेवाएँ प्रदान की और आध्यात्मिक, सामाजिक कार्यों में समाज को समय समय पर मार्ग दर्शन दिया। इस शोकाकुल क्षति को भर पाना अत्यन्त मुश्किल है। महात्मा जी ने श्रद्धेय माता जी के साथ मिलकर देश विदेश में आर्य समाज का परचम लहराते हुए 100 के करीब पुस्तकें भी लिखी, आर्य समाज उनका सदा ऋणी रहेगा। महर्षि दयानन्द मठ (वेदमन्दिर) ढन्न मुहल्ला जालन्धर का ट्रस्ट एवं प्रवन्धकर्तृसभा इस शोकाकुल अवसर पर महात्मा चैतन्य मुनि जी को श्रद्धा के सुमन अर्पित करती है और उनके बताए मार्ग पर चलने का प्रण लेती है। इस अवसर पर ट्रस्ट प्रधान श्री ओ३म प्रकाश अग्रवाल, कैलाश अग्रवाल, ध्रुव मितल, प्रधान कुन्दन लाल अग्रवाल, महामंत्री राजिन्द्र देवविज, अरूण कोहली, प्रकाश सुनेजा, सत्य शरण गुप्ता, अरूण मितल, विनीत आर्य, राम भुवन शुक्ला, सुदेश मितल, प्रभा विज, किरण जिन्दल, प्रभा सुनेजा, मीरा कोहली, राजेश अमर प्रेमी आदित्य प्रेमी, सुनीता प्रेमी और राजीव भाटिया आदि उपस्थित थे।

-राजिन्द्र देव विज महामंत्री

पृष्ठ 4 का शेष-अवध्य गाय का वध मत करो

वाणी का आशीर्वाद आदि के रूप में फलना फूलना हम सभी जानते ही हैं लेकिन कठोर, व्यंग्यात्मक, उपहास, क्रूर शाप आदि निकलना भी किसी से छुपे हुए नहीं है। स्नेहसिक्त वाणी जहां घावों पर मरहम का काम देती है। वहीं पर कठोर वाणी ऐसे भयानक घाव भी दे देती है कि जिनका भरना कभी संभव नहीं हो पाता। इस अति कठोर वाणी ने जगत में क्या-क्या अनर्थ, कितने बड़े-बड़े युद्ध नहीं करवाये? झूठ, निन्दा, कटुता, वैर आदि भावों से पूरित वाणी का प्रयोग-ही वाणी की हत्या करना है जिसके फलस्वरूप अनेक दु:खों और कहरों को झेलना पड़ जाता है। इसीलिये वेद मन्त्र सावधान करते हुए कहता है कि तू इसकी हत्या मत कर, यह मारने योग्य नहीं हैं। अपितु यह तो अमृत की नाभि अर्थात् केन्द्र है। सब प्रकार से इसकी रक्षा कर। यही तुम्हारा कभी क्षय न होने वाला अमृत है, भूषण हैं। महाराज भर्तृहरि ने कहा ही तो है:

केयुराणि न भूषयन्ति पुरूषं हारा न चन्द्रोज्जवला,

न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नांलकृता मूर्धजा:।

वाण्येका समलंकरोति पुरूषं या संस्कृता धार्यते,

क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

(भर्तृहरि नीति. १६)

भुजबन्द और चन्द्रमा के समान उजले हार मनुष्य को सुशोभित नहीं करते। स्नान करना, चन्दन लगाना, फूलमाला पहनना और सजाये हुए बाल भी पुरुष की शोभा नहीं बढ़ाते। शुद्ध रूप में धारण की गई एकमात्र मनुष्य की वाणी ही मनुष्य की शोभा बढ़ाती है, शेष सब गहने सदैव नष्ट होते रहते हैं, केवल वाणी रूपी गहना ही सच्चा आभूषण है। ऐतरेय ब्राह्मण का ऋषि कहता है:-

ओण्णभिधाना नकुलीदन्तै: परिवृता पंक्ति सर्वस्यै।

वाच ईशाना चारू मामिह वादयेत्।। (रेतरेच० ३/२/५)

ओ जिह्वा! तू साक्षात महारानी है-जो होंठ तेरे आवरण हैं। दन्तपंक्ति तेरी सुरक्षा पंक्ति है। तू सर्वस्वामिनी है। बस! ऐसी कृपा कर कि तेरे द्वारा मैं सुन्दर का ही उच्चारण करूं असुन्दर का नहीं।

पुन: मन्त्र की व्यापकता देखते हुए चलते हैं। जब हम आधिदैविक में आते हैं तो इसी गौ की प्रतिनिधि भूमि होती है और आधिभौतिक में यही राष्ट्र की देवी होती है। पशु जगत में यहीं चार पैरों वाली अपने स्तनों में अमृत की धाराएं भरे हुए गौ माता है।

अब आपकी समझ में सरलतापूर्वक आ रहा होगा कि चाहे किसी भी रूप में हो, किसी भी अवस्था में क्यों न हो। गौ अवध्य है। अमृत का भण्डार है। यह रत्न-गर्भा भूमि, माता और इस पर उपस्थित जीवन के लिये आवश्यक पदार्थ, इनका जब-जब भी अनावश्यक रूप से दोहन किया गया, कहना चाहिये कि उनकी हत्या की गई, मानव ने महान कष्ट ही उठाएं हैं। अनेकों प्रकार की महामारियों से त्रस्त होकर सम्पूर्ण मानव कराह उठा और बड़ी कठिनाई से उससे पार पाया जा सका।

आज भी कोरोना जैसा भयंकर विषाणु अपना विकराल रूप लेकर आया है और पूरा संसार इसके सामने घुटने टेक चुका है। राष्ट्र की देवी अर्थात् राष्ट्र की कल्याणकारी भावना, बलिदान होने की भावना, रक्षा के लिये अर्पित करने की भावना, जन-जन तक सुख सुविधाएं पहुंचा कर उन्हें सुरक्षा प्रदान करने की भावना, निरन्तर उन्नति के शिखर पर ले जाने की भावना, सुव्यवस्था रखते हुए अपने नागरिकों को सभ्य, सुशिक्षित, चरित्रवान, देशभक्त, धार्मिक न्यायप्रिय बनाने की भावना ही तो राष्ट्र की देवी है। इस गौ का भी जब-जब वध हुआ है, तब-तब यह धरा न जाने कितने लोगों के रक्त से नहा उठी है। सन् 1947 में जब राष्ट्रीय भावनाओं की बलि दी गई और थोड़े से लोगों की जिद्द और स्वार्थ से उत्पन्न इच्छा पृथक देश की मांग के रूप में उभरी और दुर्बल, दब्बू और कायर तथा अदूरदर्शी नेताओं ने राष्ट्रदेवी की हत्या की तो कई लाखों लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी और एक भयंकर तांडव नृत्य जन संहार का देखना पड़ा।

और यह दूध देने वाली गाय! आह! इसका तो कहना ही क्या?

यह तो बेचारी इतनी भोली-निरीह और सरल है कि यदि कोई इसे मारना चाहे तो इसकी आंखों में देख कर ही करुणा बरस पड़े। परन्तु दुष्ट और कुकर्मी लोगों ने इसे भी न छोड़ा। इसकी भी निर्मम हत्या की जाती है। यह हो सकता है कि किसी को वाणी का रहस्य समझ न आये यह भी हो सकता है कि स्वार्थ और देषाग्नि के कारण भूमि माता का भी ध्यान न आये यह भी हो सकता है कि पद लिप्सा के आगे राष्ट्र धर्म भी गौण हो जाये परन्तु साक्षात् रूप में सामने प्रत्यक्ष खड़ी हुई, दूध, घी, दही, मक्खन, पनीर, लस्सी आदि से अमृत की वर्षा करती हुई गाय को केवल मांस के लिये मार दिया जाना तो अत्यन्त क्रूरतापूर्ण कृत्य तो है ही इसके साथ-साथ ही यह अत्यन्त अधर्म कोटि की मूर्खता भी है। यह भी सभी के लिये अवध्य है। आज ये बेचारी गाय भी एक दो नहीं, अपितु लाखों की संख्या में काटी जा रही हैं। भारत जैसे धार्मिक कहे जाने वाले देश में ही अनेक स्थानों पर गो-वधशालाये चल रही है। आश्चर्य है कि जिस देश के लोग गोपाल श्रीकृष्ण की पूजा करते हों, उस देश में गाय का वध बड़े स्तर पर किया जाता है। निश्चय ही मति भ्रष्ट हो चुकी है, विनाश का मार्ग चुन लिया गया है।

उपरोक्त वर्णन में हमने जो कुछ भी दर्शाने का प्रयास किया, वह अमृत के केन्द्रों की बात कहता है। स्वयं वेद-मन्त्र पुकार-पुकार कर कह रहा है कि ये सभी अमृतस्य नाभि: हैं। ऐसा कौन मूर्ख और अभागा व्यक्ति होगा जो अमृत की नाभि अर्थात् केन्द्र को नष्ट करना चाहेगा। यदि ये केन्द्र नष्ट हो रहे है, या किये जा रहे हैं तो यह स्पष्ट है कि वे लोग महामूर्ख और बिल्कुल अन्धे ही हैं जिन्हें इसका पता ही नहीं है कि वास्तव में अमृत है क्या?

इसलिये प्रत्येक चेतना वाले पुरूष (चिकितुषो जन) का यह प्रथम कर्त्तव्य बनता है कि वह जहां स्वयं इस बात की गम्भीरता को समझे वहां अन्यों को भी समझाये, उन्हें भी बताये। हमें जिस वस्तु के महत्त्व का पता होता है उसकी सुरक्षा पूर्ण प्रयत्न और दक्षता से करते हैं। यहां तक कि उसके लिये अपने प्राणों का भी त्याग करने के लिए तत्पर रहते हैं। तो फिर इतनी मूल्यवान ये गौवें, इनकी रक्षा क्यों नहीं कर रहे। ३३ देवताओं में से ३१ के साथ तो इनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध है ही अन्य दो अर्थात् इन्द्र और प्रजापति के साथ भी है। प्रजापति यहां पर यज्ञ को कहा गया है। यज्ञ तो बिना गाय के कभी हो ही नहीं सकता। जब घृत ही नहीं है तो यज्ञ होगा कहां से? अत: उसके मूल में भी गाय ही विद्यमान है। अब शेष रह जाता है, इन्द्र अर्थात् बिजली। उसके ऐश्वर्य का भोग करने के लिये भी शुद्ध बुद्धि की आवश्यकता है, वह भी 'गौ' की रक्षा के बिना नहीं आ सकेगी। अत: इस प्रकार से ३३ देवताओं के साथ इस गौ का सम्बन्ध हो जाता है। आश्चर्य है कि मनुष्य इन ३३ देवताओं के स्थान पर ३३ करोड़ देवी देवताओं को तो मान रहा है, उनकी मिथ्या मूर्तियों को तो भोग लगा रहा है और उनकी प्रत्यक्ष सम्बन्धिनी की हत्या कर रहा है।

महात्मा चैतन्यमुनि जी का निधन-आर्य जगत की अपूरणीय क्षति

पूजनीय महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज का निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। महात्मा चैतन्यमुनि जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रति समर्पित रहा। सौम्य व्यक्तित्व के धनी महात्मा चैतन्यमुनि जी अपनी मधुर वाणी एवं सरल प्रवचनों के द्वारा आर्य जगत् का महान् कार्य कर रहे थे। छत्तीसगढ़, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, गुजरात, जम्मू कश्मीर, उत्तरांचल आदि भारत के सभी राज्यों के साथ नेपाल में भी जाकर वेद प्रचार का कार्य किया। उनके सरल एवं सार्थक प्रवचनों के द्वारा आर्यजन बहुत लाभान्वित होते थे। एक विद्वान् होने के साथ-साथ वे व्यवहारकुशल भी थे। छोटे बड़े सभी के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। अपने मधुर व्यवहार के द्वारा वे सभी को अपना बना लेते थे। अपने शारीरिक स्वास्थ्य की चिन्ता किये बिना वे निरन्तर वेद प्रचार यात्राओं में लगे रहते थे। अनेकों संस्थाएं उनके निस्वार्थ भाव से किये गए कार्य से लाभान्वित होती थी। योग-ध्यान साधना शिविरों, चरित्र निर्माण शिविरों आदि के माध्यम से वे महर्षि दयानन्द की विचारधारा को जन-जन तक पहुँचा रहे थे। अनेकों संस्थाओं और गुरूकुलों के साथ जुड़कर वे अपने विचारों से लाभान्वित किया करते थे। उनके संरक्षण में अनेकों संस्थाएं वेद प्रचार के कार्यों में लगी हुई थी। महात्मा चैतन्यमुनि जी का जन्म 15 जुलाई 1948 को सुन्दरनगर हिमाचल प्रदेश में हुआ था। इनके पिता पण्डित रामशरण जी एवं माता श्रीमती धनवन्ती देवी जी थे। केन्द्रीय ऊर्जा मन्त्रालय में राजपत्रित अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त होने पर अगस्त 2006 में अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सत्याप्रिया सहित स्वामी सत्यपति जी महाराज वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ से दीक्षा लेकर वानप्रस्थ में दीक्षित हो गए। महात्मा चैतन्यमुनि जी ने आर्य समाज सुन्दरनगर के विभिन्न पदों पर रहकर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के कार्यकारी अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, महामन्त्री, वेद प्रचार अधिष्ठाता, संचालक आर्य वीर दल आदि अनेक पदों पर रहकर कार्य करते रहे।

महात्मा चैतन्यमुनि जी

महात्मा चैतन्य मुनि जी एक सफल वक्ता होने के साथ-साथ उच्चकोटि के साहित्यकार भी थे। वेद प्रचार के कार्यों से जो समय बचता था उसमें वे निरन्तर लेखन कार्य में व्यस्त रहते थे। वैदिक साहित्य के ऊपर उन्होंने दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं। रामायण, महाभारत, उपनिषदों के ऊपर प्रश्नोत्तर शैली में पुस्तकें लिखकर लोगों के मन में उठने वाली शंकाओं का समाधान किया। यज्ञ के विषय पर पुस्तकें लिखकर लोगों में यज्ञ के प्रति आस्था को उत्पन्न किया। धार्मिक साहित्य के रूप में इन्होंने सद्बुद्धि की कामना, मुक्ति एवं मुक्ति के साधन, अमरता की ओर, तप का वास्तविक स्वरूप, चतुर्दिक उन्नति का आधार स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान क्यों और कैसे?, सत्संग साक्षात् कल्पतरू है, मनुष्यता के आठ सूत्र, मुमुक्षुत्व का महत्व, गीता पर एक हजार प्रश्नोत्तर, उपनिषद पर एक हजार प्रश्नोत्तर, सोलह संस्कारों का महत्व, गुरू और उसका महत्व, श्रीकृष्ण भक्ति रहस्य, वेद की महत्ता एवं ईश्वर सिद्धि, प्रभु से मित्रता करें, विद्वानों का संग क्यों करें, अन्य कोई मार्ग नहीं, गृहस्थ को स्वर्ग कैसे बनाएं, सत्यमेव जयते, अपने स्वरूप की पहचान, निराले गुरू शिष्य, क्रान्ति के अग्रदूत, स्तुति-प्रार्थना व उपासना क्यों, राजव्यवस्था कैसी हो? गृहस्थ को सुखी बनाने के सूत्र, गोवा का खूनी इतिहास, बन्दा वैरागी, क्या पुनर्जन्म नहीं होता आदि पुस्तकों का लेखन किया। इसके साथ ही इन्होंने कथा साहित्य और काव्य साहित्य पर भी लेखन कार्य किया। उन्होंने वैदिक वशिष्ठ पत्रिका, आर्यवन्दना, नवनीत भारती, गूंजती घाटियां आदि हिन्दी पत्रिकाओं का सम्पादन कार्य बड़ी लगन के साथ किया।

महात्मा चैतन्यमुनि जी आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से निरन्तर अपनी रचनाओं का प्रसारण करते रहते थे। उन्होंने अनेक संस्थाओं के साथ जुड़कर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु सराहनीय कार्य किया। महात्मा चैतन्यमुनि जी को साहित्य अकादमी, सत्यार्थ रत्न, आर्यश्रेष्ठी तथा सारस्वत सम्मान सहित अनेकों राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उन्होंने साक्षरता अभियान में महत्वपूर्ण कार्य किया जिसके लिए उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

महात्मा चैतन्यमुनि जी के निधन से सम्पूर्ण आर्य जगत् को हानि हुई है। महात्मा जी के रूप में हमने एक मार्गदर्शक खो दिया है। आर्य जगत् में उनकी कमी को पूरा नहीं किया

(शेष पृष्ठ छः पर)

सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से यज्ञ का आयोजन

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में कोरोना महामारी से जूझ रहे विश्व के कल्याण, शान्ति एवं स्वास्थ्य की कामना करते हुए यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री सूर्यकान्त शोरी जी प्रधान एवं श्री भारत भूषण जी मैनन सैक्रेटरी हवन करते हुये। जबकि चित्र दो में कोरोना योद्धाओं को सम्मानित किया गया।

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में कोरोना महामारी से जूझ रहे विश्व के कल्याण, शान्ति एवं स्वास्थ्य की कामना करते हुए यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के द्वारा विश्व की कोरोना महामारी से मुक्ति हेतु प्रार्थना की गई।

इस यज्ञ में पंजाब के मुख्यमन्त्री कैप्टन अमरेन्द्र सिंह द्वारा श्री केवल सिंह ढिल्लों के परामर्श से जिला शिकायत निवारण कमेटी के चयनित सदस्यों श्री महेन्द्रपाल सिंह पक्खो, श्री नरेन्द्र शर्मा, श्री जसमेल सिंह, श्री सूरत सिंह, बाजवा को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। इसके साथ ही इस अवसर पर समस्त कोरोना योद्धाओं को भी नमन किया गया। इस अवसर पर कॉलेज प्रबन्धक समिति के महासचिव श्री भारत भूषण मैनन ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में इस संकटकालीन समय में पारस्परिक सहयोग, संयम व कर्त्तव्य निर्वहन का आह्वान किया। उन्होंने धार्मिक महापुरूषों के जीवन से उदाहरण देकर सेवा भावना का संदेश दिया। श्री मैनन ने कहा कि यदि सभी लोग अपनी जिम्मेदारी के प्रति सजग होंगे तभी हम इस संकटकालीन कोरोना महामारी के दौर का मुकाबला करने में समर्थ व सफल हो पाएंगे।

इस अवसर पर उपस्थित महानुभावों के द्वारा कॉलेज प्राचार्या डॉ. नीलम शर्मा के पिता श्री कृष्ण देव शर्मा, कॉलजिएट स्कूल इंचार्ज मैडम किरण सीकरी के पिता श्री वीरचंद के स्वर्गवास होने पर शोक प्रकट किया गया एवं दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर कॉलेज प्रबन्धक समिति के प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री केवल जिन्दल, बरनाला नगरपालिका प्रधान श्री संजीव शोरी, सदस्य श्री प्रदीप गोयल, श्री सुखमहेन्द्र सिंह संधू, डॉ. टार्जन शर्मा, मैडम अनीता सिंघल विशेष रूप से उपस्थित हुए। इनके साथ ही कॉलेज व कॉलिजिएट स्कूल का स्टॉफ भी मौजूद रहा। स्कूल प्राध्यापिका मैडम रिंकू ने मंच का संचालन किया। इस अवसर पर सामाजिक दूरी का विशेष ध्यान रखा गया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

-प्राचार्य डा. नीलम शर्मा

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक:-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org